संजीव के उपन्यास और साहित्यिक विमर्श

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी), दयालबाग़, आगरा की पीएच–डी. (हिन्दी) की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध विषय की प्रस्तावित

रूपरेखा
(सन् – 2017)

निर्देशिका : — शोधार्थिनीः

प्रो. कमलेश कुमारी रवि
प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
कला संकाय

गुर प्यारी यादव
बी.एड, एम.ए., एम.फिल्

हिन्दी विभागाध्यक्ष
प्रो. शर्मिला सक्सेना

कला संकाय प्रमुख
प्रो. जे. के. वर्मा

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी),
दयालबाग़, आगरा– 282005

संजीव के उपन्यास और साहित्यिक विमर्श

शोध परिचय

विमर्श से तात्पर्य निरंतर संवाद से है। समसामयिक परिस्थितियों व समाज में उठते मुख्य मुद्दों के ऊपर साहित्य में जो निरंतर संवाद की प्रक्रिया चल रही है, उसे ही हम समकालीन साहित्यिक विमर्शों के अन्तर्गत निहित कर सकते हैं। आज की समकालीन वैचारिक पृष्ठभूमि के अन्तर्गत उपभोक्तावाद, साम्प्रदायिकता, निम्न मध्यवर्गीय जीवन, आदिवासी जीवन, नारी मुक्ति का प्रश्न ,समाज में नारी का दायरा, युवा पीढ़ी की समस्याएं व भटकाव, पारिवारिक विघटन, अस्मिता प्रतिरोध व संघर्ष आदि विषयों पर निरंतर विचार किया जा रहा है। आज के समाज में घटित होती प्रत्येक संवेदनशील घटना व समस्याओं को साहित्य का आधार बनाया जा रहा है क्योंकि साहित्य ही वह माध्यम है, जो इन संवेदनशील घटकों के प्रति जन साधारण की भावनाओं को उत्प्रेरित कर सकता है। गत वर्षों में हिन्दी साहित्यकारों की विचारधारा में कुछ परिवर्तन आया है और समकालीन हिन्दी साहित्य की विचार विमर्श प्रणाली के क्षेत्र में नवीन विषयों का प्रादुभार्व हुआ है। हिन्दी की पारंपरिक और प्रगतिशील विचारधाराओं के सामान्तर वर्तमान समय में स्त्री, दलित, आदिवासी और अल्पसंख्यक समाज से जुडे कुछ ऐसे प्रश्न उभरकर सामने आये हैं जिनका गहरा सम्बन्ध परम्परा से भी है और आधुनिकता से भी है।

समकालीन विषय व्यापकता की असीमित सीमाओं को ग्रहण करता हुआ उपन्यास लेखन निरंतर विकसित होता जा रहा है। उपन्यासकार अपने उपन्यास साहित्य के अन्तर्गत समसामयिक जीवन के विविध पहलुओं, विविध रूपों एवं विभिन्न स्तरों पर प्रकाश डालता है और मनुष्य की आशा, आकांक्षा, दुख–निराशा, कर्तव्य और आदर्श को अत्यधिक यथार्थ रूप में प्रस्तुत करता है। यही कारण है कि उपन्यास विधा आधुनिक युग की चेतना को वहन करने में अन्य विधाओं की तुलना में अधिक सक्षम है। अतः संजीव जी ने उपन्यास विधा को जीवन के विविध पहलुओं से जोड़कर समकालीन सामाजिक बिन्दुओं को अपने साहित्य लेखन में अभिव्यक्ति दी है।

संजीव समकालीन हिन्दी कथा– साहित्य में अपना अलग स्थान रखते हैं। संजीव कहानी और उपन्यासों के साथ ही कविता, नाटक, यात्रा–वृत्तान्त, बाल–उपन्यास आदि विधाओं पर कलम चलाते हैं। संजीव का सम्पूर्ण साहित्य हर तरह के शोषण और गैर बराबरी का विरोध करता है। इनके साहित्य में सत्ता की दमनकारी नीतियों के प्रति विद्रोह है साथ ही शोषित जनता की समाज में अत्यधिक निम्न स्थिति को लेकर

व्यवस्था के प्रति आक्रोश भी है। संजीव नें अपने साहित्य में सदियों से शोषित रहे लोगों के संघर्ष को स्वर दिया हैं। इनके साहित्य में आदिवासी, दलित, नारी, मजदूर और सर्वहारा वर्ग के समाज की स्थिति को अभिव्यक्ति मिली है। जहाँ संजीव वर्ग रहित समाज की रचनाओं में मार्क्स के विचारों का अनुकरण करते हैं वहीं जाति रहित समाज के लिए महात्मा ज्योतिबा फुले, राजर्षि शाहू महराज और डॉ0 बाबा साहब अम्बेडकर के पक्षधर हैं।

संजीव जी का जन्म **6 जुलाई 1947 बाँगर कला, सुल्तानपुर (उत्तर प्रदेश) में हुआ।** इन्होंने कहानी, उपन्यास, नाटक, यात्रा–वृत्तान्त, बाल–उपन्यास आदि विधाओं पर लेखन कार्य किया है, जो इस प्रकार से है–**कहानी संग्रह** – तीस साल का सफ़रनामा, आप यहाँ है, भूमिका और अन्य कहानियाँ, दुनिया की सबसे हसीन औरत, प्रेत मुक्ति, प्रेरणा स्त्रोत और अन्य कहानियाँ, ब्लैक होल, डायन और अन्य कहानियाँ, खोज, गली के मोड़ पर सूना सा कोई दरवाजा । **उपन्यास**– किसनगढ़ के अहेरी, सर्कस, सावधान नीचे आग है, धार, पाँव तले की दूब, जंगल जहाँ शुरू होता है, सूत्रधार, आकाशचम्पा, फाँस । **नाटक**– ऑपरेशन जोनाकी। **यात्रा साहित्यः**– सात समंदर पार। **बाल उपन्यास**– रानी की सराय, डायन आदि। इसके अतिरिक्त संजीव जी की प्रतिभानुसार इनको हिन्दी जगत ने कई सम्मानित पुरस्कारों से भी सम्मानित किया है, जो इस प्रकार है– अखिल भारतीय सारिका सर्वभाषा कथा प्रतियोगिता का प्रथम पुरस्कार, कथा क्रम सम्मान, इंदु शर्मा अंतर्राष्ट्रीय कथा सम्मान, पहल कथा सम्मान, सुधा कथा सम्मान आदि।

प्रस्तुत शोध विषय की प्रेरणा एवं चयन :–

साहित्य युग सापेक्ष होता है उसमें युग की समस्याएं, धड़कने, आकांक्षाएँ और स्वप्न मूर्तता ग्रहण करते हैं चूंकि साहित्यकार समाज का सबसे संवेदनशील अंग होने के कारण अपने युग और परिवेश को गहनता से अनुभूत कर उसकी अभिव्यक्ति अपने साहित्य में दर्ज करता है, यही कारण है कि कोई भी साहित्य समकालीन समय से वंचित नहीं रह सकता। सृजन यदि अपने समकालीन परिवेश से आंखे चुरा लेता है, तो वह न तो जीवंत व यथार्थ रह पाता है और न ही उसका प्रभाव स्थायी होकर मानव मूल्यों को उत्प्रेरित कर पाने में सक्षम हो पाता है।

एक साहित्यकार का उद्देश्य यही है कि वह अपने समकालीन समाज में घटित हो रही प्रत्येक प्रकार की उचित व अनुचित स्थितियों का चित्रण निडर रूप से अपने लेखन में करें क्योंकि साहित्य का उद्देश्य ही अपने समय में हो रही स्थितियों का निष्पक्ष रूप से चित्रण करना है तभी वह उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

अतः साहित्यिक विमर्श के सन्दर्भ में यदि संजीव के उपन्यासों का अध्ययन किया जाए तो हमें ज्ञात होगा कि उन्होंने अपने लेखन के केन्द्र में दलित, स्त्री, आदिवासी, अल्पसंख्यक समुदायों की समस्याओं को चित्रित किया है, साथ ही उनके अस्मिता संघर्ष को भी अभिव्यक्ति दी है।

उपन्यास विधा के प्रति मेरा रूझान प्रारम्भ से ही रहा है, " संजीव के उपन्यास और साहित्यिक विमर्श " पर शोध कार्य करने की प्रेरणा मुझे मेरी शोध निर्देशिका प्रो. कमलेश कुमारी रवि जी के सत् परामर्श सहयोग व निर्देशन से मिली।

प्रस्तुत शोध प्रबंध का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध प्रबंध का उद्देश्य संजीव के उपन्यास और साहित्यिक विमर्श पर अध्ययन करना है जिसका मुख्य केन्द्र बिन्दू भारत देश के दलित, स्त्री, आदिवासी, मजदूर, किसान, अल्पसंख्यक समाज के शोषित समुदाय और उनकी सामाजिक स्थिति का अध्ययन करना है। भारतीय समाज में वर्ग और जातीयता को आधार बनाकर वर्षों से निम्न वर्ग का शोषण किया जा रहा है जो आज भी किसी न किसी रूप में व्याप्त है। वर्षों से चली आ रही शोषितों की इस स्थिति को संजीव जी ने अपने उपन्यास लेखन के माध्यम से विद्रोह का स्वर दिया है।

संजीव जी पर कार्य करना मेरे लिए अत्यन्त हर्ष का विषय रहा है। संजीव जी जैसे उम्दा लेखक पर शोध कार्य करना अपने आप में बहुत बड़ा कार्य है। आपने अपने साहित्य में वर्तमान समय के मुख्य केन्द्रित विमर्शों को स्थान दिया जो आज के ज्वलंत प्रश्न है, साथ ही लोक जीवन के सांस्कृतिक पहलुओं को भी चित्रित कर उनकी सांस्कृतिक विरासत को आपने सजीवता के साथ औपन्यासिक रूप में ढाला है।

अनुसंधान की प्रविधि

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। मनुष्य होने के कारण वह खोज करता रहता है तथा खोज के समय अनुसंधान की विभिन्न पद्धतियों का प्रयोग करता है। साहित्य के क्षेत्र में शोध करते समय अनुसंधान की पद्धति का प्रयोग किया जाता है। "संजीव के उपन्यास और साहित्यिक विमर्श" में वर्णनात्मक, विवेचनात्मक, विचारात्मक आदि अनुसंधान पद्धतियों का शोध के समय प्रयोग किया जायेगा साथ ही पत्र–पत्रिकाओं, संगोष्ठियों तथा लेखकों के विचार –विमर्शों को भी अध्ययन का आधार बनाया जायेगा।

पूर्व प्रस्तुत कार्य का विवरण

संजीव जी के साहित्य को आधार बनाकर मेरी जानकारी के अनुसार तीन शोध कार्य सम्पन्न हो चुके हैं जिनका विवरण इस प्रकार है–

1. संजीव के कथा साहित्य में सर्वहारा समाज जीवन का चित्रण, संतोष रघुनाथर्व (शोधार्थी), डा० बाबा साहेब अम्बेडकर मराठावाड़ा यूनिवर्सिटी।

2. संजीव के उपन्यासों में संवेदना और शिल्प, रविन्द्र कुमार यादव (शोधार्थी), लखनऊ यूनिवर्सिटी।

3. साहित्य का समाजशास्त्र और संजीव के उपन्यास, रजनी त्यागी (शोधार्थी), चौ. चरण सिंह यूनिवर्सिटी।

अतः संजीव जी के साहित्य पर उपर्युक्त शोध कार्य सम्पन्न हो चुके हैं, चूकि मेरा शोध विषय "संजीव के उपन्यास और साहित्यिक विमर्श" है जिस पर अभी तक किसी भी प्रकार का शोध कार्य नहीं हुआ है इस दृष्टि से मेरा यह शोध कार्य पूर्णतः मौलिक एवं नवीन है।

कार्य की मौलिकता :–

"संजीव के उपन्यास और साहित्यिक विमर्श" विषय पर अभी तक कोई भी शोध कार्य नहीं हुआ हैं। मेरा यह शोध कार्य पूर्णतः मौलिक एवं नवीन होगा। शोध और समीक्षा के क्षेत्र में प्रस्तुत शोध प्रबंध एवं विनम्र किन्तु संतुलित दृष्टि का प्रयास भर होगा। इस शोध प्रबन्ध के द्वारा एक नई दृष्टि साहित्य को देने के लिए मेरा एक नगण्य प्रयास किंचित मात्र भर होगा।

शोधार्थी

गुर प्यारी यादव

संजीव के उपन्यास और साहित्यिक विमर्श

प्रथम अध्याय : संजीव व्यक्तित्व एवं कृतित्व

उपन्यास : परंपरा और विकास

द्वितीय अध्याय : समकालीन साहित्यिक विमर्श : सैद्धांतिक विवेचन

- दलित विमर्श
- स्त्री विमर्श
- आदिवासी विमर्श
- अल्पसंख्यक विमर्श
- लोक विमर्श

तृतीय अध्याय : संजीव के उपन्यास : दलित विमर्श की अभिव्यक्ति

- दलित जीवन की यथार्थ अभिव्यक्ति
- सामाजिक बहिष्कार और दलित समुदाय
- शोषण आधारित समाज व्यवस्था का चित्रण
- प्रतिरोध की संस्कृति का चित्रण

चतुर्थ अध्याय : संजीव के उपन्यास : स्त्री विमर्श की अभिव्यक्ति

- परिवार और स्त्री
- स्त्री शोषण का चित्रण
- स्त्री स्वतंत्रता और समाज

- स्त्री प्रतिरोध की अभिव्यक्ति

पंचम अध्याय : संजीव के उपन्यास : आदिवासी एवं अल्पसंख्यक विमर्श की अभिव्यक्ति

- आदिवासी समाज और संस्कृति का चित्रण
- आदिवासी संस्कृति पर संकट
- आदिवासी प्रतिरोध की अभिव्यक्ति
- अल्पसंख्यक समाज की अभिव्यक्ति

षष्टम अध्याय : संजीव के उपन्यास : लोक विमर्श

- किसान एवं ग्राम्य जीवन की अभिव्यक्ति
- भाषा एवं संस्कृति का चित्रण
- लोक और उसकी चिताएं

उपसंहार

परिशिष्ट–

- आधार ग्रन्थ
- सन्दर्भ ग्रन्थ
- साक्षात्कार
- प्रश्नावली
- पत्र–पत्रिकाएँ

<u>सन्दर्भ ग्रन्थ सूची</u>

<u>आधार ग्रन्थ</u>

क. सं.	पुस्तक का नाम	लेखक	प्रकाशन	वर्ष
1.	किसनगढ. के अहेरी	संजीव	मीनाक्षी पुस्तक मन्दिर दिल्ली	प्रथम संस्करण 1981
2.	सर्कस	संजीव	राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली	प्रथम संस्करण 1984
3.	सावधान! नीचे आग है	संजीव	राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली	प्रथम संस्करण 1986
4.	धार	संजीव	राजकमल प्रकाशन	प्रथम संस्करण 1997
5.	पाँव तले दूब	संजीव	प्रवीन प्रकाशन दिल्ली	प्रथम संस्करण 1995
6.	जंगल जहाँ शुरू होता है	संजीव	राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली	प्रथम संस्करण 2000
7.	सूत्राधार	संजीव	राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली	प्रथम संस्करण 2003
8.	आकाश चम्पा	संजीव	रेमाधव प्रा. लि. गाजियाबाद	प्रथम संस्करण 2008
9.	रह गई दिशाएँ इसी पार	संजीव	राजकमल प्रकाशन	प्रथम संस्करण 2012
10.	फांस	संजीव	वाणी प्रकाशन	प्रथम संस्करण 2015

सहायक ग्रन्थ

क.सं.	पुस्तक का नाम	लेखक	प्रकाशन	वर्ष
1.	आधुनिक हिन्दी उपन्यास	डॉ. नामवर सिंह	राजकमल प्रकाशन इलाहाबाद	प्रथम संस्करण 2010
2.	आधुनिक हिन्दी उपन्यास और वर्ग संघर्ष	केशवदेव शर्मा	राधा पब्लिकेशन नई दिल्ली	प्रथम संस्करण 1991
3.	उत्तर आधुनिक साहित्यिक विमर्श	सुधीश पचौरी	वाणी प्रकाशन दिल्ली	तृतीय संस्करण 2005
4.	उपन्यास की रचना	गोपाल राय	राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली	2012
5.	उपन्यास समय और संवेदना	विजय बहादुर सिंह	वाणी प्रकाशन दिल्ली	2013
6.	परिधि पर स्त्री	मृणाल पांडे	राधाकृष्णा प्रकाशन दिल्ली	प्रथम संस्करण 1996
7.	परम्परा, सृजन और उपन्यासकार	विनोद तिवारी	लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद	प्रथम संस्करण 2004
8.	समकालीन कथाकार और नई कथावृतियाँ	गुरचरण सिंह	संजय प्रकाशन दिल्ली	प्रथम संस्करण 2007
9.	सामाजिक यथार्थ और कथाकार संजीव	डॉ. शहाजहान मणेर	श्रुति पब्लिकेशन जयपुर	प्रथम संस्करण 2009
10.	समकालीन हिन्दी उपन्यास	डॉ. विवेकी राय	राजीव प्रकाशन इलाहाबाद	प्रथम संस्करण 1987

11.	स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास और ग्राम चेतना	डॉ. ज्ञानचन्द गुप्त	अभिनव प्रकाशन दिल्ली	प्रथम संस्करण 1974
12.	स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों में सामंत जीवन	विजय कुमार अग्रवाल	विक्रम प्रकाशन दिल्ली	प्रथम संस्करण 1990
13.	हिन्दी उपन्यास मे वर्ग भावना	डॉ. प्रताप नारायण टंडन	लखनऊ विश्वविद्यालय प्रकाशन	प्रथम संस्करण 1956
14.	हिन्दी साहित्य का इतिहास	गोपाल राय	राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली	प्रथम संस्करण 2002

पत्र एवं पत्रिकाएँ

1. तद्भव– संपादक– अखिलेश, लखनऊ, 1 नवम्बर 2016
2. शोध श्री (दलित विमर्श विशेषांक) 2010– संपादक– प्रो. शर्मीला सक्सेना, हिन्दी विभाग दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट, आगरा
3. अपनी माटी– ई–पत्रिका, त्रैमासिक
4. दलित अस्मिता– त्रैमासिक पत्रिका, दिल्ली